महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष मे से एक थे: प्रो भीमनाथ झा

❑ गांधीदर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रासंगिक–डॉ मुश्ताक

❑ गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता–डॉ प्रेम मोहन मिश्र

मीर शहनवाज

दरभंगा। महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनक विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है।उनका व्यक्तित्व महान है।गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है इसको कभी भूला नहीं जा सकता है। मिथिला और महात्मा दोनों एक–दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है।गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है।उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी,नई दिल्ली तथा सी एम कॉलेज,दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में महात्मा गांधी रूमिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ रू चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य के रूप में कहा।उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है।आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है,तभी गांधीचरित और मैथिली–साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा।इस कार्य में आलोचना–समालोचना आवश्यक है,क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होता है। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है।भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है।मैथिली साहित्य राम,कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है।चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था,जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी।गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे।मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था।अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है।मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है।हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रसांगिक है।साहित्य अकादमी के

कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की डेढ़ सौ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं,जिनका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है ।युवा आज पश्चात प्रभाव में आ रहे हैं, जिन्हें हम गांधी जैसे महापुरुषों की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेंद्र शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्राय: विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्राय: सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है।गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है।गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है।इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा,डॉ अशोक कुमार मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव,प्रो रमेश झा,डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन,डॉ सुरेंद्र भारद्वाज,स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा,डॉ भागवत मंडल,रोशन कुमार यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा,डॉ पी के चौधरी,डॉ सुरेश पासवान, डॉ आर एन चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो अभिलाषा कुमारी तथा धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो रागनी रंजन ने किया।

गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी : प्रो भीमनाथ झा

■ दरभंगा नगर (एसएनबी)।

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनक विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है।गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा प्रासंगिक : डॉ. मुश्ताक

उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सी एम कॉलेज,दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में ष्महात्मा गांधी रूमिथिला और मैथिली ट्टविशेष संदर्भ रू चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य के रूप में कही। इस मौके पर साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है।गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे।मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है।हर भाषा की अपनी एक संस्.ति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। समारोह कोसाहित्य अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया, साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेंद्र शेखर पाठक आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा,डॉ अशोक कुमार नमेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव,प्रो रमेश झा,डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन,डॉ सुरेंद्र भारद्वाज,स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा,डॉ भागवत मंडल,रोशन कुमार यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा,डॉ पी के चौधरी,डॉ सुरेश पासवान, डॉ आर एन चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

उद्घाटन करते डॉ भीमनाथ झा, डॉ मुस्ताक अहमद एवं अन्य।

गांधी को महात्मा बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान : प्रो . भीमनाथ

- साहित्य अकादमी और सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन
- गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत बताई
- विद्वानों ने रखे विचार, मैथिली साहित्य राम व कृष्ण के बाद गांधी को मानता विष्णु का तृतीय अवतार

सीएम कॉलेज में संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो . भीमनाथ झा • जागरण

जागरण संवाददाता दरभंगा : महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने व सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहे हैं। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रो. भीमनाथ झा ने कहीं। वे साहित्य अकादमी व सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में गुरूवार को उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है, क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होती है। साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था, जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पाई थी। गांधी विश्व के नेता व भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था। अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ. मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। इस अवसर पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ.फूलचंद मिश्र रमन, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ. योगानंद झा, डॉ.भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रो. विश्वनाथ झा, डॉ. पीके चौधरी, डॉ. सुरेश पासवान, डॉ. आरएन चौरसिया सहित दर्जनों की संख्या में शिक्षक, शोधार्थी व छात्र-छात्राएं शामिल थे।

कार्यक्रम • सीएम कॉलेज एवं साहित्य अकादमी की ओर से संगोष्ठी का हुआ आयोजन

मिथिला व महात्मा एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में रहे मददगार : प्रो. भीमनाथ झा

एजुकेशन रिपोर्टर | दरभंगा

वक्ता ने कहा- आज भी गांधी के विचारों की प्रासंगिकता सर्वदेशिक व सर्वकालिक

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। इनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है। मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रो. भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी,नई दिल्ली व सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में "महात्मा गांधी :मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है। तब गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है। क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होती है।

सीएम कॉलेज में सेमिनार को संबोधित करते डॉ. भीम नाथ झा।

सेमिनार में उपस्थित प्रतिभागी।

राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का रहा है महत्वपूर्ण योगदान : डॉ. प्रेम मोहन मिश्र

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था। जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी।

भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन न हो : डॉ. मुश्ताक अहमद

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ. मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरी भाषा साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन न हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा प्रसांगिक रहेगा। साहित्य अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की डेढ़ सौ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

मिथिला समाज ने गांधी को किया आत्मसात : डॉ. अमरेंद्र शेखर पाठक

साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अमरेंद्र शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है।गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है। मौके पर पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. फूलचंद मिश्र रमण, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज आदि भी थे।

Scanned with CamScanner

सीएम कॉलेज में 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली 'विशेष संदर्भ : चंपारण' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी शुरू

अलौकिक व्यक्तित्व के धनी थे महात्मा गांधी

दरभंगा | एक प्रतिनिधि

संगोष्ठी

- गांधी दर्शन मानवता की रक्षा को सदा प्रासंगिक : डॉ. मुश्ताक
- गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता : डॉ. प्रेम मोहन

सीएम कॉलेज में गुरुवार को संगोष्ठी का उद्घाटन करते डॉ. भीमनाथ झा व अन्य।

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। उनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है। उनका व्यक्तित्व महान है। गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है।

ये बातें प्रख्यात साहित्यकार प्रो. भीमनाथ झा ने गुरुवार को कही। वे सीएम कॉलेज में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सीएम कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 'महात्मा गांधी :मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण)' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है, क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होती है।

साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देता रहा है। भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है। मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था, जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी। गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ. मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है। हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरी भाषा के साहित्य को भी पढ़ना-समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए सदा प्रासंगिक है।

साहित्य अकादमी की कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है। युवा आज पाश्चात्य प्रभाव में आ रहे हैं, जिन्हें हम गांधी जैसे महापुरुषों की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अमलेंदु शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्रायः विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज ने गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्रायः सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है। गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है। गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है।

मौके पर प्रो. प्रीति झा, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ. नरेश कुमार विकल, डॉ. फूलचंद मिश्र रमन, डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ. योगानंद झा, डॉ. भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रो. विश्वनाथ झा, डॉ. पीके चौधरी, डॉ. सुरेश पासवान, डॉ. आरएन चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अभिलाषा कुमारी तथा धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रगनी रंजन ने किया।

Scanned with CamScanner

कार्यक्रम. महात्मा गांधी : मिथिला व मैथिली पर सेमिनार

गांधी को महात्मा बनाने में रहा मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान

- गांधी के जीवन और कार्यों से समृद्ध हुआ मैथिली साहित्य : डॉ झा
- सीएम कॉलेज में दो दिवसीय सेमिनार शुरू

प्रतिनिधि ▷ दरभंगा

साहित्य अकादमी मैथिली के पूर्व सदस्य डॉ भीम नाथ झा ने कहा कि गांधी को महात्मा बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है. मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है. गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है. महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के महापुरुष थे. उनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है. डॉ झा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सीएम कॉलेज की ओर से 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण)' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे. उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव रहा है. गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की जरुरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा. कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है. कारण यह कि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होता है.

मैथिली साहित्य गांधी को मानता विष्णु का तृतीय अवतार : साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से देश को दिशा और दशा देते रहा है. राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है. मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा है. मैथिली साहित्य राम, कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है. कहा कि चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि 'मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था. वहां सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी'. कहा कि गांधी विश्व के नेता तथा भारत के त्राता थे. मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया गया था.

मौके पर पीजी मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. प्रीति झा, डॉ अशोक मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो. रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन, डॉ सुरेंद्र भारद्वाज, स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा, डॉ भागवत मंडल, रोशन यादव, प्रो. विश्वनाथ झा, डॉ पीके चौधरी, डॉ सुरेश पासवान, डॉ आरएन चौरसिया थे. संचालन प्रो. अभिलाषा कुमारी व धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रागनी रंजन ने किया.

कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करतें डॉ भीमनाथ झा, प्रो . प्रेम मोहन मिश्र, प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद आदि .

गांधी आधारित संपूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन आवश्यक

साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमलेंदु शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्राय: विश्व के सभी देशों पर पड़ा है. मिथिला ने गांधी को आत्मसात किया है. मैथिली साहित्य के प्राय: सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है. गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है. गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन आवश्यक है.

गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए प्रासंगिक

प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि मैथिली हमारी मातृभाषा है. हर भाषा की अपनी संस्कृति होती है. हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना और समझना चाहिए. भारत की सभी भाषा में गांधी दर्शन है. गांधी दर्शन मानवता की रक्षा के लिए प्रासंगिक है. कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है. गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर कई कार्यक्रम हो रहे हैं. इसका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है. युवा आज पश्चात्य प्रभाव में आने लगे हैं.

ادبی سرمایے کو تحقیق کا موضوع بنایا جانا ضروری: پروفیسر بھیم ناتھ جھا

سی ایم کالج میں مہاتما گاندھی کے افکار ونظریات کے موضوع پر دو روزہ قومی سمینار

دربھنگہ: ادبی سرمایے کے تحقیق کو لے کر منعقد پروگرام کے افتتاحی تقریب کا شمع روشن کرافتتاح کرتے کارکنان۔۔۔۔۔

دربھنگہ (آفتاب جیلانی) بابائے قوم مہاتما گاندھی نے نہ صرف ہندوستان کی سیاسی تحریک کی قیادت کی اور ملک کو انگریزی حکومت سے نجات دلانے میں اہم کردار ادا کیا بلکہ ملک کے مجملہ شعبہ حیات کو انہوں نے متاثر کیا اور خصوصی طور پر ہندوستانی ادب پہ ان کے افکار ونظریات کے گہرے نقوش ثبت ہوئے۔ ان خیالات کا اظہار میتھلی ادب کے نامور ادیب وشاعر پروفیسر بھیم ناتھ جھا نے کیا۔ پروفیسر جھا مقامی سی ایم کالج، دربھنگہ میں ساہتیہ اکادمی نئی دہلی کے زیر اہتمام منعقد دو روزہ قومی سیمینار ”مہاتما گاندھی: متھلا اور میتھلی“ کے افتتاحی جلسہ سے خطاب کر رہے تھے۔ انہوں نے کہا کہ گاندھی جی نے چمپارن سے جو تحریک شروع کی وہ پورے ہندوستان کے لئے مشعل راہ ثابت ہوا اور اس میں متھلانچل کے عوام کا بڑا رول رہا۔ گاندھی جی نے اس خطے میں انگریزوں کے خلاف آواز اٹھانے کے لئے متحد کیا اور مختلف زبانوں کے ادباء اور شعراء کو قومی یکجہتی پر مبنی تخلیقات پیش کرنے کی گذارش کی۔ جس کا نتیجہ ہے کہ آج اردو، ہندی، میتھلی میں گاندھی کے فکر ونظر پر مبنی مواد کی کمی نہیں ہے۔ خاص کر میتھلی میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے لیکن افسوس کی بات ہے کہ وہ یکجا نہیں ہے اس لئے اب یونیورسٹیوں میں گاندھی لٹریچر کو یکجا کرنے اور اس پہ ریسرچ کرنے کی ضرورت ہے۔ پروفیسر پریم موہن مشرا، کنوینر میتھلی ایڈوائزری بورڈ نے کہا کہ گاندھی جی نے شروع میں سماج کے پڑھے لکھے طبقے کو متاثر کیا لیکن بعد کے دنوں میں ان کا مقصدِ حیات عوام بن گیا اس لئے اس وقت کے قلم کاروں نے بھی گاندھی فلسفہ کو اپنی تحریروں میں جگہ دینا شروع کیا۔ ڈاکٹر املندو شیکھر جھا نے گاندھی اور متھلانچل کے موضوع پر روشنی ڈالی اور یہ ثابت کیا کہ میتھلی ادب میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے۔ ساہتیہ اکادمی کی پروگرام آفیسر محترمہ منجیت کور بھاٹیہ نے اس سیمینار کی اہمیت وافادیت پر روشنی ڈالی اور گاندھی کے نظریات کو وقت کی اہم ضرورت بتایا۔ اپنے صدارتی خطبہ میں کالج کے پرنسپل ڈاکٹر مشتاق احمد نے کہا کہ بابائے قوم مہاتما گاندھی کی سوانح اور ان کی دیگر تصنیفات بالخصوص صحافت کے مطالعے سے یہ حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ گاندھی سے پہلے کا ہندوستان انگریزوں سے لوہا لینے کو تیار نہیں تھا لیکن گاندھی نے عدم تشدد کے سہارے انگریزی حکومت کو مجبور کر دیا کہ وہ ہندوستان کو آزاد کرے۔ اس لئے نئی نسل کو گاندھی کے فکر وفلسفہ پر مبنی لٹریچر اور تاریخ کو پڑھنی چاہئے کیوں کہ آج ملک میں جس طرح کا اضطراب پیدا ہو گیا ہے ایسے وقت میں صرف اور صرف گاندھی کا راستہ ہی ملک کو ایک نیا راستہ دکھا سکتا ہے۔ افتتاحی جلسہ کی نظامت ڈاکٹر ابھیلاشا نے کیا جب کہ رسم شکریہ کی ادائیگی ڈاکٹر راگنی رنجن صدر شعبہ میتھلی نے ادا کیا۔ افتتاحی جلسہ کے بعد دو تکنیکی سیشن ہوئے۔ پہلے سیشن میں کیدار ناتھ جھا، نریش کمار وکل، نریندر ناتھ نے مہاتما گاندھی کی شاعری اور میتھلی لٹریچر پر ان کے اثرات پر مقالے پیش کئے۔ دوسرے سیشن کی صدارت پروفیسر کیرتی جھا نے کیا اور پروفیسر شیو پرساد یادو، ڈاکٹر مشتاق احمد اور ابھیلاشا کماری نے اپنے مقالے پیش کئے۔ ڈاکٹر احمد نے مہاتما گاندھی کی صحافت پر تفصیلی روشنی ڈالی اور ان کے پیغام کو عام کرنے میں ان کی صحافت کا کیا کردار تھا اس کا خلاصہ پیش کیا۔ واضح ہو کہ یہ دو روزہ سیمینار 9-10 جنوری میں تقریباً دو درجن اسکالر شامل ہو رہے ہیں۔ کل مورخہ دس جنوری کو دو سیشن ہوں گے اور اختتامیہ اجلاس میں پروفیسر سریندر کمار سنگھ وائس چانسلر للت نرائن متھلا یونیورسٹی، دربھنگہ گاندھی جی اور چمپارن ستیہ گرہ پر اپنا خصوصی مقالہ پیش کریں گے۔ شرکائے سیمینار میں ڈاکٹر سریش پاسوان، ڈاکٹر راگنی رنجن، پروفیسر وشوناتھ جھا، ڈاکٹر نریندر ناتھ جھا، پروفیسر کیدار ناتھ جھا، کے علاوہ کالج کے تمام اساتذہ وطلباء اور طالبات شامل تھے۔

روزنامہ پٹنہ
TAASIR
URDU DAILY
PATNA
تاثیر
तासीर उर्दू दैनिक, पटना

مہاتما گاندھی کے افکار پر مبنی ادبی سرمایے کو تحقیق کا موضوع بنایا جانا ضروری: پروفیسر بھیم ناتھ جھا

سی ایم کالج میں مہاتما گاندھی کے افکار و نظریات کے موضوع پر دو روزہ قومی سمینار شروع

دربھنگہ: 9 رجنوری (عبدالمتین قاسمی) بابائے قوم مہاتما گاندھی نے نہ صرف ہندوستان کی سیاسی تحریک کی قیادت کی اور ملک کو انگریزی حکومت سے نجات دلانے میں اہم کردار ادا کیا بلکہ ملک کے جملہ شعبہ حیات کو انہوں نے متاثر کیا اور خصوصی طور پر ہندوستانی ادب پہ ان کے افکار و نظریات کے گہرے نقوش ثبت ہوئے ہیں۔ مذکورہ خیالات کا اظہار میتھلی ادب کے نامور ادیب وشاعر پروفیسر بھیم ناتھ جھا نے کیا۔ پروفیسر جھا سی ایم کالج، دربھنگہ میں ساہتیہ اکادمی نئی دہلی کے زیر اہتمام منعقد دو روزہ قومی سمینار "مہاتما گاندھی: متھلا اور میتھلی" کے افتتاحی جلسہ سے خطاب کر رہے تھے۔ انہوں نے کہا کہ گاندھی جی نے چمپارن سے جو تحریک شروع کی وہ پورے ہندوستان کے لئے مشعل راہ ثابت ہوئی اور اس میں متھلانچل کے عوام کا بڑا رول رہا۔ گاندھی جی نے اس خطے میں انگریزوں کے خلاف آواز اٹھانے کے لئے متحد کیا اور مختلف زبانوں کے ادباء اور شعراء کو قومی یکجہتی پر مبنی تخلیقات پیش کرنے کی گذارش کی، جس کا نتیجہ ہے کہ آج اردو، ہندی، میتھلی میں گاندھی کے فکر و نظر پر مبنی مواد کی کمی نہیں ہے۔ خاص کر میتھلی میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے لیکن افسوس کی بات ہے کہ وہ یکجا نہیں ہے اس لئے اب یونیورسٹیوں میں گاندھی لٹریچر کو یکجا کرنے اور اس پر ریسرچ کرنے کی ضرورت ہے۔ پروفیسر پریم موہن مشرا، کنوینر میتھلی ایڈوائزری بورڈ نے کہا کہ گاندھی جی نے شروع میں سماج کے پڑھے لکھے طبقے کو متاثر کیا لیکن بعد کے دنوں میں ان کا مقصد حیات عوام بن گیا اس لئے اس وقت کے قلم کاروں نے بھی گاندھی فلسفہ کو اپنی تحریروں میں جگہ دینا شروع کیا۔ ڈاکٹر املندو شیکھر جھا نے گاندھی اور متھلانچل کے موضوع پر روشنی ڈالی اور یہ ثابت کیا کہ میتھلی ادب میں ان پر بہت کچھ لکھا گیا ہے۔ ساہتیہ اکادمی کی پروگرام آفیسر محترمہ منجیت کور بھاٹیہ نے اس سمینار کی اہمیت وافادیت پر روشنی ڈالی اور گاندھی کے نظریات کو وقت کی اہم ضرورت بتایا۔ اپنے صدارتی خطبہ میں کالج کے پرنسپل ڈاکٹر مشتاق احمد نے کہا کہ بابائے قوم مہاتما گاندھی کی سوانح اور ان کی دیگر تصنیفات بالخصوص صحافت کے مطالعے سے یہ حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ گاندھی سے پہلے کا ہندوستان انگریزوں سے لوہا لینے کو تیار نہیں تھا لیکن گاندھی نے عدم تشدد کے سہارے انگریزی حکومت کو مجبور کر دیا کہ وہ ہندوستان کو آزاد کرے۔ اس لئے نئی نسل کو گاندھی کے فکر و فلسفہ پر مبنی لٹریچر اور تاریخ کو پڑھنا چاہئے کیوں کہ آج ملک میں جس طرح کا اضطراب پیدا ہو گیا ہے ایسے وقت میں صرف اور صرف گاندھی کا راستہ ہی ملک کو ایک نیا راستہ دکھا سکتا ہے۔ افتتاحی جلسہ کی نظامت ڈاکٹر ابھیلاشا نے کیا جب کہ رسم شکریہ کی ادائیگی ڈاکٹر راگنی رنجن صدر شعبہ میتھلی نے ادا کیا۔ افتتاحیہ جلسہ کے بعد دو تکنیکی سیشن ہوئے۔ پہلے سیشن میں کیدار ناتھ جھا، نریش کمار وِکل، نریندر ناتھ نے مہاتما گاندھی کی شاعری اور میتھلی لٹریچر پر ان کے اثرات پر مقالے پیش کئے۔ دوسرے سیشن کی صدارت پروفیسر کیرتی جھا نے کیا اور پروفیسر شیو پرساد یادو، ڈاکٹر مشتاق احمد اور ابھیلاشا کماری نے اپنے مقالے پیش کئے۔ ڈاکٹر احمد نے مہاتما گاندھی کی صحافت پر تفصیلی روشنی ڈالی اور ان کے پیغام کو عام کرنے میں ان کی صحافت کا کیا کردار تھا اس کا خلاصہ پیش کیا۔ واضح ہو کہ یہ دو روزہ سمینار 10-9 جنوری میں تقریباً دو درجن اسکالر شامل ہو رہے ہیں۔ کل مورخہ دس جنوری کو دو سیشن ہوں گے اور اختتامیہ اجلاس میں پروفیسر سریندر کمار سنگھ وائس چانسلر للت نرائن متھلا یونیورسٹی، دربھنگہ گاندھی جی اور چمپارن ستیہ گرہ پر اپنا خصوصی مقالہ پیش کریں گے۔ شرکائے سمینار میں ڈاکٹر سریش پاسوان، ڈاکٹر راگنی رنجن، پروفیسر وشوناتھ جھا، ڈاکٹر نریندر ناتھ جھا، پروفیسر کیدار ناتھ جھا، کے علاوہ کالج کے تمام اساتذہ و طلباء اور طالبات شامل تھے۔

महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष-प्रो० भीमनाथ झा

दरभंगा (ह०सं०)। महात्मा गांधी अलौकिक व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे, जिनके विचारों की प्रासंगिकता सार्वदेशिक व सर्वकालिक है।उनका व्यक्तित्व महान है।गांधी को महात्मा बनाने तथा सफल बनाने में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला और महात्मा दोनों एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है। गांधी के जीवन और कार्यों से मैथिली साहित्य समृद्ध हुआ है।उक्त बातें मैथिली साहित्य के इनसाइक्लोपीडिया कहे जाने वाले प्रोफेसर भीमनाथ झा ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा सी एम कॉलेज,दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में 'महात्मा गांधी : मिथिला और मैथिली (विशेष संदर्भ : चंपारण) विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य के रूप में कहा। उन्होंने कहा कि गांधी के विचारों का मैथिली साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज गांधी से संबद्ध मैथिली साहित्य में उपलब्ध सामग्रियों पर शोध करने की सख्त जरूरत है, तभी गांधीचरित और मैथिली-साहित्य की समृद्धि का पता चलेगा। इस कार्य में आलोचना-समालोचना आवश्यक है,क्योंकि आलोचना ही व्यक्तित्व की वास्तविक कसौटी होता है।

साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मिथिला हमेशा से ही देश को दिशा और दशा देते रहा है।भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में मिथिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली साहित्य गांधी चर्चा से भरा पड़ा है।मैथिली साहित्य राम,कृष्ण के बाद गांधी को विष्णु का तृतीय अवतार मानता है।चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधी ने स्वयं लिखा कि मैं राजा जनक की भूमि चंपारण गया था,जहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने आंदोलन को जनआंदोलन का रूप देकर भारत में पहली बार सफलता पायी थी।गांधी विश्व के नेता तथा भारत के ज्ञाता थे। मिथिला में ही गांधी को महात्मा नाम से सर्वप्रथम संबोधित किया था।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ मुश्ताक अहमद ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में महत्वपूर्ण है।मैथिली हमारी मातृभाषा या हमारे परिवेश की भाषा है।हर भाषा की अपनी एक संस्कृति होती है। हर साहित्य प्रेमी को दूसरे भाषा के साहित्य को भी पढ़ना समझना चाहिए। भारत की कोई भी भाषा नहीं है, जिसमें गांधी दर्शन ना हो। गांधी दर्शन मानवता की रक्षा हेतु सदा प्रासंगिक है।

साहित्य अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने कहा कि साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में कार्यक्रम करता है। गांधी की डेढ़ सौ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी से अवगत कराना है। युवा आज पश्चात प्रभाव में आ रहे हैं, जिन्हें हम गांधी जैसे महापुरुषों की जीवनी की जानकारी दे रहे हैं। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ अमरेंद्र शेखर पाठक ने कहा कि गांधी विचार का प्रभाव प्राय: विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। मिथिला समाज गांधी को आत्मसात किया है। मैथिली साहित्य के प्राय: सभी पक्षों में गांधी वर्णन मिलता है।गांधी के मिथिला आगमन से लेकर आज तक गांधी पर मैथिली में रचना धारा निरंतर चली आ रही है।गांधी आधारित सम्पूर्ण मैथिली साहित्य का संकलन होना आवश्यक है।

इस अवसर पर प्रोफेसर प्रीति झा,डॉ अशोक कुमार मेहता, डॉ शिवप्रसाद यादव, प्रो रमेश झा, डॉ नरेश कुमार विकल, डॉ फूलचंद मिश्र रमन, डॉ सुरेंद्र भारद्वाज,स्वीटी कुमारी, डॉ योगानंद झा, डॉ भागवत मंडल, रोशन कुमार यादव, प्रोफेसर विश्वनाथ झा, डॉ पी के चौधरी, डॉ सुरेश पासवान, डॉ आर एन चौरसिया सहित एक सौ से अधिक शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो अभिलाषा कुमारी तथा धन्यवाद ज्ञापन मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो रागनी रंजन ने किया।